गौरैयाः कुछ रोचक बातें

क्या आप इस बात से परिचित हैं कि अपनी घरेलू गौरैया भी विलुप्त होने क राह पर है। हॉ, यह सच है कि गौरैया की संख्या धीरे-धीरे कम हो रही है। ये हर जीव की तरह हमारी पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत बनाने में सहायक हैं। अब समय आ गया है कि हम उनके बारे में गंभीरता से सोचें और उनका संरक्षण करें।

छोटी सी गौरैया के बारे में कुछ सामान्य ज्ञान

- गौरैया का दिल प्रति मिनट 800 बार धड़कता है।
- गौरैया के पास 3100-3600 पंख होते हैं।
- अभी तक गौरैया की सबसे ज्यादा उम्र 13 साल दर्ज की गई है। हर साल युवा गौरैया के जीवित रहने की दर 25 प्रतिशत कम हो जाती है। व्यस्क गौरैया में से 40 प्रतिशत से अधिक गौरैया हर साल मर जाती है।
- केवल 200 साल पहले, उत्तरी अमेरिका के पूरे महाद्वीप पर गौरैया का निवास नहीं था। आज यहाँ पर 150 लाख गौरैया रहती हैं।
- घरेलू गौरैया (हाउस स्पैरो) समुद्र तल से 15,000 फुट पर जीवित निर्वाह करने में सक्षम होती है।
- प्रजनन के लिए आमतौर पर ये मानवीय इलाकों जैसे कि खेत और शहरी क्षेत्रों में घरों को अपना केन्द्र बनाती हैं। गौरैया अब वुडलैंड्स जंगलों, घास के मैदानों और रेगिस्तानों में नहीं दिखाई देती है।
- गौरैया उथले पानी में स्नान करना पसंद करती है।
- छोटी सी गौरैया को भगवान ने अनोखे ढंग से निर्मित किया है। पूरे जीवन में गौरैया की आवाज चैं-चैं से वातावरण को गुलजार करती हैं। यह आवाज तब और तेज हो जाती है, जब वह अपने अधिकार के लिए लड़ रही होती है।
- गौरैया अनाज पर निर्भर होती है, लेकिन अपने बच्चों के लिए कीड़ों का शिकार करती है। ये कीड़े रात में निकलते हैं। गौरैया पत्तियों के बीच में उनके हलचल को पहचान लेती है और उनका शिकार कर अपने बच्चों का पेट भरती हैं।

उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड
पूर्वी विंग, तृतीय तल, ए ब्लाक, पिकप भवन,
विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (उ०प्र०) 226010;
फोन : 0522–4006746, 2306491 द्वारा प्रकाशित
ईमेल : upstatebiodiversityboard@gmail.com
वेबसाइट : upsbdb.org;

प्रो. अमिता कनौजिया
जन्तु विज्ञान विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

प्यारी गौरैया
आओ घर बुलाएं गौरैया

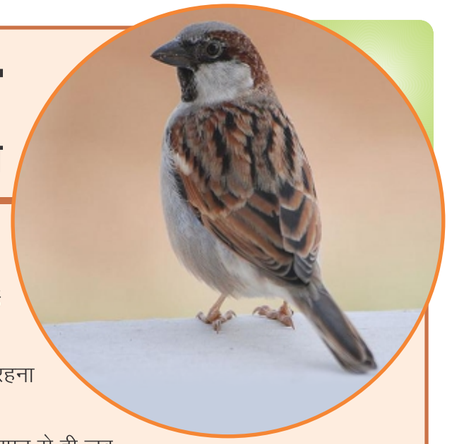

रफिया अंजुम एवं अब्दुल वहीद, लखनऊ के बसेरा बिहार, कल्याणपुर के निवासी हैं इनको बचपन से पक्षियों से अटूट प्रेम रहा है। रफिया को पक्षियों को पिंजरे में कैद करके रखना बिल्कुल भी पसन्द नही है। वह सिर्फ पक्षियों से ही नहीं बल्कि सभी जानवरों को कैद में रखने के खिलाफ हैं।

इनका मानना है कि पक्षियों को आजाद एवं उनके प्राकृतिक स्थान में रहना ज्यादा अच्छा लगता है। वे दोनों ही आजाद पक्षियों को पसन्द करते हैं।

रफिया को सिर्फ पक्षियों से ही नही अन्य कई जानवरों से लगाव है। बचपन से ही जब भी कोई पक्षी इनके घर आकर बैठता था तो ये उसे भोजन जैसे चावल, बाजरा, जौं, गेहुँ, काकुन आदि देती थी, साथ ही साथ गाय को भी भोजन देती हैं। गाय इनके घर सुबह, दोपहर एवं शाम को आती हैं। भोजन के लिए यदि भोजन नही बचता है तो ये उनको आलू खिलाती हैं। आज तक किसी भी पक्षी या गाय को इन्होंने बिना भोजन के नही जाने दिया।

लखनऊ के विभिन्न क्षेत्रों में प्रो० अमिता कनौजिया एवं उ०प्र राज्य जैवविविधता बोर्ड, लखनऊ के द्वारा चलाए जा रहे गौरैया जागरूकता अभियान से प्रभावित होकर इन्होंने अपने घर के ही खाली प्लाट में कोई कमरा न बनवाकर गौरैया संरक्षण केन्द्र का निर्माण किया, जिसमें इन्होंने 40-45 घरौंदे लगाये। इनको धूप एवं वर्षा के बचाव हेतु छप्पर एवं भोजन, पानी के लिए बर्तन रखे। इसमें बहुत सी गौरैया प्रतिदिन आती हैं। इसकी देखभाल के लिए दोनों प्रतिदिन प्लाट की सफाई करते एवं समय-समय पर पक्षियों के लिए भोजन एवं पानी उपलब्ध कराते हैं।

पक्षियों को प्राकृतिक आवास प्रदान करने हेतु उसमें घास, कनेर, गुड़हल एवं गुलाब आदि के पौधे लगाये जिन पर गौरैया बैठती हैं। गौरैया संरक्षण केन्द्र को स्थापित करके एक मिसाल कायम की है। इनका पक्षियों से अटूट प्रेम एवं पक्षियों के प्रति लगाव को देखकर उठाया गया कदम सराहनीय है।

दो मंजिला घोसला

गौरैया संरक्षण अनूठा प्रयास

गौरैया संरक्षण केन्द्र, लखनऊ